पाठ - 13
नबी ﷺ की पैदाइशी खूबियां

الدرس الثالث عشر - هندي
صفات النبى ﷺ الخلقية

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दरमियाना क़द थे। आप न तो बहुत ज़्यादा लम्बे थे और न ही छोटे क़द के थे। आपके दोनों मूंढों के बीच फ़ासला था, आपके अंग सन्तुलित थे।, मुनासिब थे, सीना चौड़ा था। आपका चेहरा लोगों में सबसे ज़्यादा खूबसूरत था। आप सफ़ेद थोड़े सुर्ख थे। आपका चेहरा गोल था, आँखें सुरमई थीं, नाक पतली थीं, मुंह खूबसूरत था, दाढ़ी घनी थी, अनस रजि0 बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुशबू से बेहतर न तो अम्बर की खुश्बू को पाया और न हीं मुश्क को और मैंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ से ज़्यादा नर्म किसी दूसरे इन्सान का हाथ नहीं देखा

आपका चेहरा हंसता हुआ था, हमेशा मुस्कुराया करते थे। आपकी आवाज़ बड़ी उमदा थी। आप कम बोलने वाले थे। आपके बारे में अनस रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि आप लोगों में सबसे ज़्यादा हसीन थे और सबसे बड़े दानी थे और सबसे बड़े बहादुर थे।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ अच्छे अख़लाक़ : आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों में सबसे ज़्यादा बहादुर थे। अली रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जब कोई मुश्किल समय पेश आता और हमारा सामना किसी क़ौम से होता तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़रिए हम बचा करते थे। आप लोगों में सब से बड़े दानी थे। आप किसी मांगने वाले को महरूम नहीं किया करते थे। इसी तरह रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे ज़्यादा सूझ बूझ वाले थे। आप अपने नफ्स के लिए बदला नहीं लेते थे और न ही अपने नफ्स के लिए गुस्सा होते थे, अलबत्ता जब अल्लाह की हुरमतों की पामाली की जाती तो आप अल्लाह के लिए बदला लिया करते थे। आप की निगाह में हक़ के मामले में क़रीबी और दूर और ताक़तवर व कमज़ोर सभी बराबर होते और आपने ताकीदी तौर पर कहा था कि किसी को दूसरे पर तक़वा की बुनियाद पर फ़जीलत हासिल है और सभी लोग बराबर हैं। और पिछली क़ौमों की तबाही का कारण यह था कि उनमे जब कोई शरीफ इन्सान चोरी करता तो उसे छोड़ दिया करते थे और जब कमज़ोर इन्सान चोरी करता तो उसको सज़ा दिया करते थे। आपने इर्शाद फ़रमायाः **"अल्लाह की क़सम! यदि फ़ातिमा भी चोरी करती तो मैं उसका हाथ काट डालता।**

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी खाने में दोश नहीं निकालते थे। यदि आपकी इच्छा होती तो खाते, वर्ना छोड़ दिया करते थे। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर वालों पर महीने दो महीने ऐसे भी आते जिनमें उनके घर में आग नहीं जलाई जाती। उनकी खूराक खजूर और पानी था। आप भूख की सखती में अपने पेट पर एक या दो पत्थर बांधा करते थे। आप जूती टांक लेते, कपड़े में पेवन्द लगाते और घर में अपने बाल बच्चों की मदद करते थे। आप बीमारों की बीमार पुरसी करते। आप बड़े ही खाकसार थे। आपको मालदार या फ़क़ीर और नींच और शरीफ में से जो कोई दावत देता, आप उसकी दावत स्वीकार कर लेते। आप मिसकीनों से मुहब्बत करते और उनके जनाज़ों में शिर्कत करते थे। बीमारों की बीमार पुरसी करते। किसी फ़क़ीर को उसकी मोहताजी की वजह से कमतर नहीं जानते और किसी बादशाह की बादशाहत से भय नहीं खाते थे। आप घोड़े, ऊंट, गधे और खच्चर में से हरेक की सवारी किया करते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुख, चिंता व परेशानी की अधिकता के बावजूद बहुत ज़्यादा मुस्कुराते थे। आप खुश्बू पसन्द करते और बदबू को ना पसन्द किया करते थे। अल्लाह ने आपको ऊंचे दर्जे का अखलाक़ और बेहतरीन अमल से नवाजा था और आप को ऐसा ज्ञान प्रदान किया था कि उस जैसा ज्ञान और किसी को प्रदान नहीं किया था। जबकि आप अनपढ़ थे और पढ़ना लिखना नहीं जानते थे और इन्सानों में से कोई आपका उस्ताद नहीं हुआ। यह कुरआन करीम अल्लाह की ओर से आप पर नाज़िल हुआ है जिसके बारे में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया हैः

﴿قُلْ لَئِنِ اجْتَمَعَتِ الإِنْسُ وَالجِنُّ عَلَى أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا القُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا﴾

यानी ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप कह दिजीए कि तमाम इन्सान व जिन्नात मिलकर इस कुरआन की तरह लाना चाहें तो नही ला सक्ते अगर वह लोग इस काम के लिए आपस में एक दुसरे के मदतगार भी हो जाएं (सूरह बनी . इसराईल . आयत 88)

आपके अनपढ़ होने में एक बड़ी हिकमत उन झूठों के शक का पूरी तरह इन्कार है कि आपने कुरआन करीम को लिखा है या आपने किसी से सीखा है या पिछली क़ौमों की किताबों से हासिल किया है।